लेखक-परिचय :

नाम : शैवाल

जनम-तिथि : 23.2.1949

सिच्छा : स्नातक

कहानी संगरह : समुद्रगाथा, मरुबात्रा, सुषमा के घर में घोड़ा, अरण्यगाथा, दामुल

ई हिन्दी आउ मगही के चर्चित कहानीकार हथ। इनकर कहानी पर सिनेमा भी बनल। रेणु जी के बाद जे पीढ़ी कहानी में आयल ओकरा में शैवाल के नाम आदर से लेवल जा हे। ई रास्ट्रीय ख्याति के कहानीकार हथ। दामुल, मृत्युदंड, इनकर चर्चित फिलिम हे। इनकर रचना के अनुवाद कई देसी-विदेसी भासा में होल हे ।

'दहाड़' कहानी में शैवाल बाढ़ के विनास-लीला के बड़ा मार्मिक चित्रन कैलन हे। हर साल बाढ़ आवऽ हे आउ इहाँ के बसिन्दा लोग के जिनगी तबाह हो जा हे। कहानी के नायक बेंगुची, नकुआ, सिद्धि सिंह आउ दरोगा के माध्यम से कहानीकार बाढ़ से तबाही, ऊपर से सामंती रोबदाब, परसासन के धौंस देखलयलन हे । सामंत लोग थाना, दरोगा-सिपाही के मदद से बेंगुची आउ नकुआ के फँसा के ओकर बाढ़ में डूबल जिनगी के लास लेखा सामंती भय आउ रौबदाब से मरघट में जरावऽ हथ। दहाड़ आउ बसिंदा लोग के चउतरफा तबाही देख के दिल दहल जा हे ।

दहाड़

हवा में लटकल घोंघा नियर बेंगुची के दाँत टिंगिर-टिंगिर बज रहल हल। ठेहुना-बीच दबल माथा डाक बाबा के सवारी नियर हिलइत हल। उधिर फल्गू मनसोख बुतरू नियरं लोधापुल के कंधा पर धोबियानाथ देखे लेल माथा पटकइत हल, इधिर उतरंगिया हवा जटु गोड़ाइत के सिंगहिया बैल नियर एकसुर में भागइत जा रहल हल। फल्गू नदी, बरसात आउ पुल के बीच बेंगुची मल्लाह असमान के जीभ तर हवा मिठाई नियर बिलायल जा रहल हल...

पुल से बंगखोरिया मोड़ तक अंधेरिया कुप्प सड़क ओही अंधेरिया के फाल नियर बजावइत किरतनिया अइसन बरसाती जीव ! अँधरिया में टप्पा -टोइया करे से का फायदा! मुदा आँख चियार के पाँच - सात बार देखलक बेंगुची... जे नकुआ तऽ अब दल्लू पासी के तड़ीखाना तक पहुँचल होयत, लउटत होयत सिद्धि सिंह के हाहापुर के बंगला से। मुदा ओकर गाना के आवाज उल्टा दिसा में जा रहल हल–

लहँगा बिक गयो, लुगरा बिक गयो
बिक गयी अंगिया तन की
आ राजा के बाँधन की सैला बिक गयो
फजीहत हो गई घर-घर की!

अवाज के दिसा पहचान के बेंगुची के जी बुझ गेल..... ई नकुआ ससुरा भी पता नयँ, जान देवे लेल किधिर-किधिर से इहाँ आ गेल। एक दिन देमंती नाउन ओकरा बारे में हाथ उनार-उनार के कहइत हल, 'हे–ऊ बत्तीस कोस बंगला से आयल हे मइया...जंगले–जंगल तऽ हे खाली उहाँ....ओ हे, फुद्दी चिरइयाँ अइसन लिरी–बिरी अमदी...दुर्र, एही नकुआ के देखके अंदाज लगाहो नयँ हे सेखपुरावाली भौजी...! से फुद्दी चिरइयाँ अइसन दाना चुने लेल नकुआ छत्तीसगढ़ से निकलल तऽ राँची, असाम आउ लालटेनगंज होते इहाँ आके फँस गेल—बरहमदेव सिंह के भट्ठा पर, बीस ऊपर दस रुपइया महिन्ना के नौकरी में। आयल हल तऽ एगो कनियाय आउ बुतरू साथ लेके। मुदा नकुआ ठीके गावऽ हे बेचारा–महँगाई के मार पड़ल तब सब बिक गेल, हो भाईबंद–लहँगा–लुगरी तऽ जाय दऽ खिसवा वाला हाल कि मेहरारू भी गपतगोल। बुढ़उ जीवराखन सिंह टेंट में बीड़ी अइसन उड़सके छपरा चल गेलन।

ओकर दू महिन्ना बाद बुतरू भी कोदवा नाय के चपेट में आके भगवान के प्यारा हो गेल। रह गेल नकुआ जे गरमी भर ईंटा पारऽ हे, बरसात में कंगाली अयला पर कउनो मल्लाह के असिस्टेंट हो जाहे! अबकी बार ऊ बेंगुची के साथ आ गेल। आउ कइसन अजगुत बात कि बालू सूँघ के हप्ता भर पहले बता देलक–'दहाड़ तऽ आ रहलो हे! ओही भेल.....। हप्ता पुरे के एक दिन पहले ही लोधापुल पर पोरसा भर पानी हहाय लगल, सहबाजपुर आउ सारधू के बाँध टूट

गेल। उधिर सियरभूंका से भी पानी रेल देलक। तीन दिन तक लगातर पानी भेल। टुनकी छप्पर नियर फरफराइत रहल असमान। कोसमा में पचास बीघा खेत बालू से भर गेल। सड़क जगह-जगह से रद-बुद हो गेल।

लोधापुल के ऊँचाई एकदम कम हे। पुल बने लगल हल तऽ इंजीनियर साहेब ऊँचाई कम रखे के ओजह बतौलका हल कि पुल के ऊँचाई जादे रहे से पानी थथम जायत आउ परलय मचा देत। इंजीनियर साहेब तऽ अइलन-गेलन, मुदा पुल हिंए रह गेल आउ साथे-साथे हुनमान चलीसा पढ़ेला हियाँ के वासी भी चित्रकूट पर ही छूट गेलन। .....अब समझऽ कि बाढ़ तऽ इतिहास हो गेल हे, हर साल अपना के दोहराबइत हे। पानी, पलु आउ परलय यानि बत्तीस खड़ो के खेल। आवे-जाय ओला जातरी लेल ई पुल पहाड़ बन जाहे। नसरीबाद से पलना तक जाय ओला बस अब ओही पार तक ठुमक के रुक जाहे, जइसे ई पार ससुराल के ड्योढ़ी दिखगेल होय। हहाइत, फोरायल कुत्ता नियर एक सुरे भागइत पानी के रेला....आउ जातरी लोग पुल के दुन्नो तरफ बइठ के माथा पीटे के रोजगार करऽ हथ। अइसन समय में झुनुकपुर के मल्लाह काम आवऽ हथ। पुल के ऊ पार से ई पार तक खंभा गाड़ के लछुमन झूला बनऽ हे....बाँस के चचरी से बनल रज्जूमार्ग यानि झूला के टैक्स फी जातरी एक रुपइया! जातरी लोग सीताराम के नाम सुमरिन करइत भवसागर पार कर जा हथ.....

लहँगा बिक गयो, लुगरा बिक गयो....अँधेरिया में गीत के अवाज अब नजीक आ गेल हे।

'नकुआ है रे?' बेंगुची मुँह पर दुन्नो हाथ से भोंपू अइसन बनाके गुहार लगौलक। दूसर ओर से भी अइसने आवाज हवा के पंखी लगाके उड़ियइत आ गेल, हो!...!...!...!

'की कहलकउ मालिक !'

'रस्ता किलियर हे !' नकुआ कहलक।

'आ बाँट-बखरा के हिसाब?'

'आधे-आध !'

बेंगुची उसाँस भरलक आउ चुप हो गेल.....सोचे लगल कुछ-कुछ....कि अबकी लगन में बेटी के बियाह देत, सब काम छोड़के... हर साल सपर के रह जाहे मुदा, कोई जोगाड़ नयँ लगऽ हे....

'औरतिया के देखलहीं, बस इस्टेंडवा पर!

'हाँ, सुन्नर हय।'

'दूर ससुरा! पूछऽ ही आयं तऽ बताबऽ हे टाँय। हम पूछते हैं, उसका साथे भी कोय है?

'नयँ तऽ कहलियो।'

'गहना-पाती?'

'देहे पर हे आउ कहाँ.....'

'केतना?'

'ढेर मनी।'

'नइहर से ससुराल जाइत हे?'

नयँ, खरीदल कनिया हे भानो सिंह के...गहना-गुरिया लेके भागल जाइत हे।'

'सिद्धि सिंह आउ की कहलकउ?'

'की कहतो....कहलको डर-भय के कोनो बात नयँ हे.....के आवेगा केस-मुकदमा करने!

ठीक झोलफोल के समय ही मलहटोली में गोदाल होवे लगल, हमे नयँ बप्पा....हम कुछ नयँ कैलियो बप्पा.....

गोदाल के आवाज बढ़इत-घटइत बेंगुची के घर पर आके रुक गेल। बेंगुची घर से बाहर आके देखलक-सिद्धि सिंह आउ सिपाही सबके साथ दरोगा जी हथ।

दरोगा जी सिद्धि सिंह से पुछलन, 'ऊ औरत आपकी कोन लगती है?'

'खास नजीकी रिस्तेमंद !

आयं! बेंगुची के माथा पर जइसे बम पटका गेल।

'इसको जानते हैं?

'खूबे जानऽ हियय। सार के समुच्चा हिस्टरी तऽ हमरा ही हे।'

'कौन ई कहे?'

'अब पकड़बो करबा एकरा कि खाली बड़का हाकिम अइसन बयाने लेबा....' सिद्धि सिंह एकदम कड़कड़ आवाज में कहलन। दरोगा जी मुसका देलन।

'पहले तलासी लेके सब मलवा निकासिए।' सिद्धि सिंह दरोगा जी के कान में कुछ कहे लगलन। बेंगुची के तऽ जइसे ठकमुरकी मार देलक राते भर में पिरथिवी गोल से टेढ़ा कइसे हो गेल ?

आध घंटा लग गेल तलासी लेवे में। फिन दू-चार ठो गेंदड़ा-गुदड़ी आउ दू-चार ठो माल कहावेवाला चीज लेके बाहर अइलन दरोगा जी। सिद्धि सिंह के कान भिजुन 'हेयर एड' अइसन लटक गेलन, 'ऊ मलवा तऽ हइये नय है।'

माल....! आही हो बाप!! केकरा से कहे बेंगुची अप्पन मन के बात। चचरी के बीचोबीच पहुँचके छीने लगल हल औरतिया के गहना-गुरिया। मुदा का जाने पिरथिवी के कउन कोना से गोहार लगावे लगली कामाख्या महरानी-हम टुरी ही, हो! परलय हो गेल, रे बाप! नकुआ ससुरा घरे भाग गेल हल। टुरी माने नकुआ के मेहरारू। रांची दन्ने घर-दुआर सब्भे हल टुरी के पास। मरद हल अधबैस पाँचे महीना बाद गंगा लाभ कर गेल....आउ सब जमीन-जजात हड़प लेलक गोतिया लोग....डयनी कहलक, मारलक आउ भगा देलक। तब ई नकुआ सहारा देलक।.....मानुस काठी से चंदन के बास आ रहल हल। सोचे लगल बेंगुची, कि ई टुरी हे कि खुद्दे सतरुपा परकीरती....टुरी हे ई, तऽ अब कहां जाइत हे? चंदन-काठी बक-बक सुसके लगल, 'उहे जमीन खातिर लड़े जाइत ही हम, अप्पन हक लेवे!

सिद्धि सिंह आउ दरोगा जी बतखेल करइत आगे बढ़ गेलन। पाछे-पाछे नाथल जनावर अइसन बेंगुची आउ नकुआ.....

गल्ली। कटोरिया सरपनाह। डाक थाना भगतिनिया मौजे। लोधा पुल, पुल के एक किनार पर काँय-काँय करइत उड़ रहल हल काम-देवता के बरात.....आउ दोसरका किनार पर फुलगेनिया नट्टिन के वमताहा छौरा फुटल कटोरा पर ताल मार-मार के गावइत हल, 'बाबू दरोगा जी कौने करनवा पियवा बाँधल जाए...!

मरखंड बोतू अइसन दरोगा जी के माथा तन गेल। मुदा आग के लुत्ती पर पानी के पटोटा डालइत सिद्धि सिंह कहलन, 'चौराहा हय मरदे.....आगे बढ़िए।

प्रकृतिस्थ हो गेलन दरोगा जी। सेमर-तर सिगरेट सुलगावे लेल खड़ा होलन। फिन माउग-मरद अइसन बतियावइत आगे बढ़ गेलन। नकुआ ससुरा के का जाने का भेल, दउड़ के उहाँ गेल जहाँ दरोगा जी खड़ा हलन। जौन जगह पर उनकर जूता हल, उहाँ के धूरी उठा के सुंघलक....फिन बेंगुची से कहे लगल, 'दहाड़ तो फिन आ रहलो हे.....!

अभ्यास-प्रश्न

मौखिक:

1. दहाड़ आवे से बेंगुची के हालत कउन रूप में बरनन कैल गेल हे?
2. बेंगुची काहे आउ कउन रूप में बिलायल जा रहल हे ?
3. नकुआ कउन हे ? ओकर हाल कइसन हे ?
4. सिद्धि सिंह के परिचय बतावऽ ?
5. दरोगा जी के पाठ के मोताबिक बेवहार बतावऽ ।
6. 'लहँगा बिक गयो, लुगरा बिक गयो' ई के गा रहल हे आउ काहे ?
7. सिद्धि सिंह दरोगा जी के कान में कुछ कहे लगलन' कहे कि अरथ साफ-साफ बतावऽ ।
8. बेंगुची बेटी के बिआह कर देवेला काहे सोच रहल हे ?

लिखित :

1. कहानीकार के परिचय बतावऽ आउ उनकर दूगो रचना के नाम बतावऽ ।
2. 'दहाड़' कहानी के नायक कउन हे ? ओकर चरित्र चित्रन करऽ ।
3. दहाड़ के बरनन कउन रूप में होल हे, लिखऽ ।
4. कहानी में कउन तरह के समाज के चित्र खिंचल गेल हे, संछेप में बतावऽ ।
5. सिद्धि आउ दरोगा के मेल से समाज पर का-का अत्याचार हो रहल हे ?
6. नीचे लिखल गद्यांस के सप्रसंग व्याख्या करऽ :

(क) लहँगा बिक गयो, लुगरा बिक गयो
बिक गयी अंगिया तन की
आ राजा के बाँधन की सैला बिक गयो
फजीहत हो गई घर-घर की

(ख) अब समझऽ कि पाँच साल से बाढ़ तऽ इतिहास हो गेल हे हर साल अपना के दोहरावइत हे । आवे-जाय ओला जातरी लेल ई पुल पहाड़ बन जाहे ।

(ग) मरद हल अधबैस । पाँचे महिन्ना बाद गंगा लाभ कर गेल ।

(घ) जउन जगह पर उनकर जूता हल, उहाँ के धूरी उठा के सुंघलक आ कहे लगल दहाड़ तो फिन आ रहलो हे .....!

7. नीचे लिखल वाक्य में जे भाव छिपल हे ऊ बतावऽ-

(क) बेंगुची मल्लाह असमान के जीभ तर हवा मिठाई नियर बिलायल जा रहल हल

(ख) इंजीनियर साहेब तऽ अइलन-गेलन, मुदा पुले हिंए रह गेल आउ साथे-साथ हनुमान चलीसा पढ़ले हियाँ के वासी भी चित्रकूट पर ही छूट गेलन।

(ग) 'हर साल सपर के रह जाहे, मुदा कोई जोगाड़ न लगऽ हे.....।'

(घ) 'अब पकड़बो करबा एकरा कि खाली बड़का हाकिम अइसन बेयाने लेबा ....।'

(ङ) राते भर में पिरथिवी गोल से टेढ़ा कइसे हो गेल ।

(च) मानुस काठी से चंदन के बास आ रहल हल ।

(छ) 'बाबू दरोगा जी कौने करनवा पियवा बाँधल जाए !

8. कहानी के तत्व के आधार पर 'दहाड़' कहानी के समिच्छा करऽ ।

भासा-अध्ययन :

1. 'दहाड़' कहानी के सारांस लिखऽ।

2. दहाड़ कहानी में कुछ बिम्ब - प्रतिमान आयल हे । हम इहाँ एगो ओकर उदाहरन दे रहली हे बाकि तू चुन के लिखऽ:

(क) लटकल घोघा नियर बेंगुची

(ख) .....

(ग) .....

(घ) .....

(च) .....

(छ) .....